

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 13, सिस्टमैटिक्स, मसीह का ईश्वरत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण, और अन्य पाठ, प्रकृति और शीर्षक

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 13 है, सिस्टमैटिक्स, मसीह का ईश्वरत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण, और अन्य ग्रंथ, प्रकृति और शीर्षक।

हम बाइबिल और व्यवस्थित सामग्री के साथ मसीह के सिद्धांत का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

और हम मसीह के ईश्वरत्व का अध्ययन कर रहे हैं। मैं एक पुस्तक का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसे मैंने हाल ही में सह-लेखक के रूप में लिखा है क्योंकि यह इस विषय पर सही है। इसका नाम है *भविष्यवाणी में यीशु, मसीह का जीवन बाइबिल की भविष्यवाणियों को कैसे पूरा करता है*। मेरे पादरी, जो एक विद्वान पादरी हैं, वैन लीस और मैंने साधकों और नए ईसाइयों के लिए यह पुस्तक लिखी है। यह सुसमाचार को बहुत, बहुत स्पष्ट रूप से और बार-बार समझाता है। यह सरल गद्य में है, और यह हमारे दिलों का बोझ है।

मैं इसका विज्ञापन करने के लिए स्वतंत्र हूँ क्योंकि हमें जो भी रॉयल्टी मिलती है, हम उससे कोई लाभ नहीं लेते। हम उसे और किताबें खरीदने और उन्हें अन्य लोगों के लिए उपलब्ध कराने में लगाते हैं। तो, वैसे भी, मैं उस बारे में बात करना चाहता था।

मैंने कई किताबें संपादित और लिखी हैं। आप मुझे गूगल कर सकते हैं, लेकिन अभी मेरे दिल पर बोझ भविष्यवाणी में यीशु है। मछली की तरह ICHTHUS, और ईसाई संक्षिप्त नाम, जिसे आप जानते होंगे।

लेकिन मसीह के ईश्वरत्व के बारे में, हमने इब्रानियों 1:1 से 2, 4 के संदर्भ में काम किया है, और अब हम अपने प्रभु के ईश्वरत्व के पाँच महान ऐतिहासिक प्रमाणों का बचाव, प्रचार और चर्चा करने के लिए तैयार हैं। सबसे पहले, वह ईश्वर के स्वभाव का है। और इनमें से प्रत्येक प्रमाण के लिए, मैं इब्रानियों 1 से शुरू करने जा रहा हूँ। मैं अन्य स्थानों पर जाऊँगा क्योंकि बाइबिल मसीह के ईश्वरत्व के बारे में बताती है।

अगर हम पवित्र आत्मा के सिद्धांत पर चर्चा कर रहे होते, तो हम कहते कि वह एक व्यक्ति है, और फिर हम कहते कि वह एक दिव्य व्यक्ति है, वह ईश्वर है, और हम पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के लिए तर्क-वितर्क करने के लिए तर्कों का उपयोग करते। लेकिन मैं इसे इस तरह से कहूँगा: बाइबिल पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व की बात फुसफुसाती है; यह मसीह के ईश्वरत्व की बात चिल्लाती है। अगर आप इसके बारे में सोचें, तो यह समझ में आता है।

सुसमाचार पवित्र आत्मा पर विश्वास करना नहीं है, जिस पर मैं विश्वास करता हूँ, और मैं उसकी सेवकाई से प्यार करता हूँ और उससे और उसके काम से आनन्दित होता हूँ, लेकिन सुसमाचार प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना है, और आप बच जाएँगे। किसी भी मामले में, मसीह के ईश्वरत्व का पहला ऐतिहासिक प्रमाण यह है कि वह परमेश्वर के स्वभाव का है। हम इसे यहाँ इब्रानियों 1 में देखते हैं। वह परमेश्वर की महिमा की चमक और उसके स्वभाव की सटीक छाप है।

और उसने अपनी शक्ति के वचन से ब्रह्माण्ड का विरोध किया। इब्रानियों के लेखक ने दो चित्र बनाए हैं, जिनमें से प्रत्येक चित्र के साथ एक मूलभूत सत्य और दो सहायक सत्यों को व्यक्त किया गया है। अलग-अलग चित्र।

पहला चित्र सूर्य और उससे निकलने वाली किरणों तथा प्रकाश की दुनिया से है। दूसरा चित्र सिक्कों की ढलाई से है, जैसा कि उन्होंने पहली सदी में किया था। लेकिन दोनों ही तीन सत्यों का संचार करते हैं।

इब्रानियों 1 के संदर्भ में, मुख्य सत्य प्रकाशन है। दूसरा सत्य समानता है। तीसरा सत्य अधीनता है।

मैं समझाता हूँ। सूर्य ईश्वर की महिमा की चमक है। पुत्र की तुलना किरण से की गई है, जो चमकती है।

ग्रीक शब्द का अर्थ भी चमक होता है, जिसका हम अब इस्तेमाल नहीं करते। सूर्य का चमकना। यह आकाश से लिया गया एक चित्र है, जो आकाश की ओर देख रहा है।

और निश्चित रूप से, हम सूर्य के बारे में अधिक जानते हैं, लेकिन वे जानते थे कि यदि आप इसे बहुत देर तक देखते हैं, तो आप अंधे हो सकते हैं। और इसलिए हम जो देखते हैं वह सूर्य से निकलने वाला प्रकाश है जो हमारी आँखों तक पहुँचता है। और परमेश्वर का पुत्र चमक है, चमकता हुआ है, परमेश्वर की महिमा का तेज है, जो सूर्य है।

यह मसीह की एक सुंदर तस्वीर है, सबसे पहले, ईश्वर को प्रकट करने वाला। किरण सूर्य है, जो लम्बी है। जो किरणें हम तक पहुँचती हैं, वे सूर्य की रोशनी हैं जो हमारी आँखों पर पड़ती हैं।

इसी तरह, और संदर्भ में, यह मुख्य बिंदु है। मसीह पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के मध्यस्थों से श्रेष्ठ है, भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ है, स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है। वह प्रकटकर्ता है।

वह वह किरण है जो अदृश्य सूर्य, सूर्य को ज्ञात कराती है। समझे? लेकिन दो अन्य चीजें उस छवि से अविभाज्य हैं। किरण सूर्य है, जो विस्तारित और प्रकट है।

यानी, इसमें परमेश्वर के पुत्र और पिता की एकता का निहितार्थ है, जिसकी महिमा को आकाश में सूर्य के रूप में चित्रित किया गया है। तीसरा, इसमें एक भेद है। इसमें एक अधीनता है।

यह अदृश्य सूर्य नहीं है। यह अदृश्य है क्योंकि अगर आप इसे घूरेंगे तो आपकी रेटिना जल जाएगी और आप अंधे हो जाएंगे। यह आसमान में मौजूद सूर्य नहीं है।

यह सूर्य ही है जिसे हम परमेश्वर के पुत्र में प्रकट होते हुए जानते हैं। इसलिए, तीन सत्य हैं: रहस्योद्घाटन, जो संदर्भ में प्राथमिक है।

दूसरा, परमेश्वर के पुत्र और पिता के बीच समानता।

पिता के प्रति पुत्र की अधीनता। हम बाद में तर्क देंगे कि यह अधीनता कार्यात्मक या आर्थिक है, न कि अनिवार्य। मेरा इरादा इस व्याख्यान की शुरुआत पंथों की भयंकर भूल बताकर करना था।

पंथों में सभी तरह के अजीब विचार हैं। कुछ घातक गलतियाँ हैं। कुछ पंथ लेवी के सत्य के आधार पर रक्त आधान से इनकार करते हैं कि शरीर का जीवन रक्त में है।

यह बेतुका है, और यह घातक है। इस खराब व्याख्या के कारण रक्ताधान न करवा पाने से आप अपनी जान गँवा सकते हैं, है न? लेकिन यह निंदनीय नहीं है। लेकिन यह नकारना कि यीशु ईश्वर हैं, निंदनीय है।

ऐसा क्यों है? क्या इससे वह बदल जाता है जो वह है? इससे वह नहीं बदलता जो वह है। लेकिन अगर मैं उसे सिर्फ़ एक देवदूत या एक साधारण इंसान मानता हूँ तो मैं उद्धार के लिए उस पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ? यही उन मसीह-विद्याओं की समस्या है जो बिल्कुल नीचे से शुरू होती हैं। वे कभी ऊपर नहीं जा सकतीं।

और जिस पर हमें उद्धार के लिए भरोसा करना चाहिए वह सिर्फ़ एक ईश्वरीय सिद्ध मनुष्य नहीं है। वह परमेश्वर का पुत्र है जो हम पापियों और हमारे उद्धार के लिए मनुष्य बन गया। दूसरी छवि बहुत स्पष्ट रूप से दिखाती है कि यीशु में परमेश्वर का स्वभाव है।

पहले वाले ने इसका निहितार्थ तब व्यक्त किया जब यह निहित समानता में से एक था। किरण सूर्य के साथ उसके समरूपता की है। यह चमकता हुआ सूर्य है।

यह उसी पदार्थ का है। लेकिन दूसरा वास्तव में प्रकृति शब्द का उपयोग करता है। यह सिक्कों की ढलाई की एक छवि है।

सूर्य ईश्वर की प्रकृति की सटीक छाप है। प्रकृति शब्द का अर्थ है धर्मत्याग। और बाइबल में इसका इस्तेमाल उन धार्मिक बहसों में इस्तेमाल किए गए तरीके से अलग तरीके से किया गया है।

यहाँ, ग्रीक न्यू टेस्टामेंट के मानक शब्दकोश के अनुसार, इसका अर्थ है आवश्यक प्रकृति, अस्तित्व और सार। ये इसकी परिभाषाएँ हैं। इसलिए, यह कहना गलत है कि, क्राइस्टोलॉजी न्यू टेस्टामेंट केवल कार्यात्मक है।

यह कभी भी ज़रूरी नहीं है। यह कभी भी प्रकृति की बात नहीं करता। यह गलत है।

ओह, यह काफी हद तक कार्यात्मक है, है न? लेकिन यहाँ एक जगह है जहाँ यह परमेश्वर के पुत्र का वर्णन करने के लिए प्रकृति शब्द के उपयोग की बात करता है। यह एक चित्र है। यह सिक्कों की ढलाई से ली गई एक छवि है।

पहली सदी की दुनिया में, एक नरम धातु को एक डाई में डाला जाता था। इसे हथौड़े से पीटा जाता था। और यहाँ डाई, जो कि प्रकृति या सार शब्द है, और सटीक छाप के बीच एक अंतर है।

ठीक है। तो, नंबर एक, मान लीजिए कि यह एक दीनार है। दीनार का सिक्का दीनार के पासे की छाप है।

यानी, संदर्भ में मुख्य विचार रहस्योद्घाटन है। आधुनिक संदर्भ में आपको निकेल डाई से एक पैसा नहीं मिलता, है न? इस तरह से समान से प्रकाश उत्पन्न होता है। समान से समान उत्पन्न होता है।

तो, दीनार दीनार की मृत्यु का प्रकटीकरण है। उसी तरह, परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर के आवश्यक स्वभाव की सटीक छाप है। दूसरे, निहितार्थ से, अच्छे निहितार्थ से, दीनार और पासा एक ही हैं।

वे एक ही चीज़ के हैं। और इस संदर्भ में, परमेश्वर के पुत्र के बारे में स्पष्ट रूप से वह कहा गया है जो स्वर्गदूतों या मात्र मनुष्यों के बारे में नहीं कहा जा सकता। वह ईश्वरीय प्रकृति या सार की सटीक छाप है।

यीशु परमेश्वर के स्वभाव के हैं। परमेश्वर को परमेश्वर बनाने वाली बात स्वयं परमेश्वर के पुत्र की विशेषता है। तीसरा बिंदु, बेशक, फिर से, एक बार फिर, भेद है।

दीनार पासा नहीं है, बल्कि यह एक अंकित पासा है, जो प्रकट है, जैसा कि यह था। इब्रानियों 1 के अलावा अन्य अंश, पाँच प्रमाणों में से प्रत्येक के लिए, मैं इब्रानियों 1 से शुरू कर रहा हूँ। मैंने इसे हमारे प्रतिनिधि अंश, हमारे आधार अंश और मसीह के ईश्वरत्व के लिए हमारे आधारभूत अंश के रूप में चुना क्योंकि यह एकमात्र ऐसा अंश है जिसके बारे में मैं नए नियम में जानता हूँ जहाँ सभी पाँच प्रमाण एक ही पाठ में मौजूद हैं। यीशु परमेश्वर के स्वभाव के हैं।

हम इसे कुलुस्सियों 2:9 में देखते हैं, जिस पर हमने पहले थोड़ा विचार किया था। वहाँ, हम पुत्र के बारे में सीखते हैं। सावधान रहो, कोई तुम्हें उस तत्वज्ञान और व्यर्थ छल के द्वारा बन्दी न बनाए, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदिम आत्माओं के अनुसार है, और मसीह के अनुसार नहीं।

क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सम्पूर्ण परिपूर्णता शारीरिक रूप में निवास करती है। उसका शरीर ईश्वर का शरीर है। वह ईश्वर-मनुष्य है।

वह परमेश्वर के सार या स्वभाव का है। ये ऐसे स्थान हैं, ये ऐसे स्थान हैं, जो पिता को प्रेरित करते हैं , पवित्रशास्त्र में, पिता को निकिया में यह स्वीकार करने के लिए प्रेरित करते हैं कि पुत्र पिता के साथ होमोउसियोस है। वह परमेश्वर पिता के समान ही प्रकृति या सार या आवश्यक अस्तित्व का है।

यीशु ईश्वर के स्वभाव के हैं। देहधारी पुत्र के पास भी उपाधियाँ हैं, दिव्य उपाधियाँ जो उसे दी गई हैं। मेरा दावा यह नहीं है कि ये उपाधियाँ हमेशा और केवल ईश्वर के लिए ही इस्तेमाल की जाती हैं, क्योंकि इनका इस्तेमाल अन्य चीजों के लिए भी किया जाता है, और मैं इस बारे में आगे बताऊँगा।

लेकिन मेरा दावा इस संदर्भ में है कि उनका उपयोग मसीह के लिए किया जाता है, और वे दिव्य उपाधियाँ हैं। इसलिए प्रभु, कुरियोस, इसका उपयोग मानव स्वामियों द्वारा किया जाता है जिनके पास नियमित रूप से दास होते हैं। उदाहरण के लिए, इफिसियों और कुलुस्सियों में, उन घरेलू संहिताओं में जहाँ पौलुस माता-पिता और बच्चों को संबोधित करता है, वह स्वामियों और दासों को भी संबोधित करता है।

लेकिन जब मसीह, देहधारी पुत्र के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तो इब्रानियों 1.10 को देखें। आप, प्रभु, स्वर्गदूत और पुत्र, स्वर्गदूत और पुत्र, आगे और पीछे हैं। आपने, प्रभु, पृथ्वी की नींव रखी, और स्वर्ग आपके हाथों का काम है, भजन 102 को उद्धृत करते हुए। यहाँ, प्रभु सृष्टिकर्ता प्रभु है।

एक बार फिर, उत्पत्ति 1:1 खुद को नए नियम में महसूस कराता है, भजन 102 के माध्यम से मध्यस्थता करता है, जो उत्पत्ति 1:1 पर ध्यान केंद्रित करता है। हे प्रभु, आपने पृथ्वी की नींव शुरू में ही रखी, उत्पत्ति 1:1, और स्वर्ग आपके हाथों का काम है। स्वर्ग और पृथ्वी हैं, और शुरुआत में हैं। यह उत्पत्ति 1:1 से भजन 102 तक का एक बहुत अच्छा संकेत है।

दूसरे शब्दों में, भगवान का यह प्रयोग सृष्टिकर्ता भगवान है। यानी यह एक दिव्य उपाधि है। अन्य स्थानों पर भी यही बात लागू होती है।

सिनॉटिक्स का क्राइस्टोलॉजी काफी हद तक निहित है। यह जॉन और पॉल और इब्रानियों के सुसमाचार में जितना साहसपूर्वक कहा गया है, उतना नहीं है। यह एक अंतर्निहित क्राइस्टोलॉजी है।

फिर भी, यह एक अत्यधिक निहित क्राइस्टोलॉजी है। मार्क 12:37 में, यीशु शास्त्रियों और फरीसियों को उलझन में डालकर भ्रमित करते हैं। शास्त्री कैसे कह सकते हैं कि मसीह, जिसका वादा किया गया था, वह दाऊद का पुत्र, दाऊद का वंशज और एक इंसान है? जाहिर है, किसी का वंशज एक इंसान होता है।

दाऊद ने खुद पवित्र आत्मा में घोषणा की, और वह भजन 110.1 को उद्धृत करता है, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों तले न कर दूँ। प्रभु

यहोवा है। अब, दाऊद इस्राएल का राजा था, और हर दूसरे इस्राएली के दो प्रभु थे, स्वर्ग में परमेश्वर और दाऊद, राजा, है न? दाऊद के दो प्रभु नहीं हैं।

उसे स्वर्ग में भगवान मिल गया है। वह राजा है। वह भगवान है, धरती पर छोटा सा एल।

लेकिन दाऊद के दो प्रभु हैं। क्या? प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, परमेश्वर दाऊद के प्रभु से कहता है, मेरे दाहिने हाथ बैठो, ब्रह्मांड में सबसे बड़े सम्मान और अधिकार का स्थान, जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों तले न कर दूँ। यीशु ने अपने शत्रुओं के होश उड़ाने के लिए भजन 110:1 की व्याख्या की।

अब, क्या मसीहा दाऊद का पुत्र नहीं है? हाँ, वे सभी सहमत हैं। वह एक पुरुष है। तो फिर, अगर यह भी सच है तो यह कैसे सच हो सकता है? वह जो कर रहा है, वह वास्तव में, भ्रूण रूप में, मसीह के व्यक्तित्व के दो स्वभावों के रहस्य को अपील कर रहा है।

दाऊद खुद उसे प्रभु कहता है। वह उसे वादा किया हुआ कहता है। वह दाऊद को आने वाला कहता है जिसके बारे में दाऊद बात करता है।

इसके अलावा, भजन संहिता की आयत 4 में, वह कहता है, तुम मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल के याजक हो। तो, वह आनेवाले के बारे में काफी कुछ कहता है। वह दाऊद का प्रभु है।

वह एक राजा है। परमेश्वर अपने लिए लड़ता है और अपने शत्रुओं को परास्त करता है। वह मल्कीसेदेक के इस क्रम में एक पुजारी है।

इस भजन में क्या चल रहा है? तो, यह अच्छी बातों से भरा हुआ है, और यह शायद बहुत कम या शायद एकमात्र, विशुद्ध रूप से मसीहाई भजनों में से एक है जो, मुझे लगता है, पूरी तरह से भविष्यवाणी करने वाला है। यह बहुत ही असामान्य है। दाऊद खुद उसे प्रभु कहता है।

तो वह उसका बेटा कैसे है? दाऊद खुद अपने प्रभु को ईश्वर मानता है। वह एक साधारण मनुष्य कैसे हो सकता है? यहाँ प्रभु की उपाधि आने वाले के लिए इस्तेमाल की गई है, और यीशु अपने बारे में बात कर रहे हैं। हम इसे समझते हैं, और दुश्मनों ने भी इसे समझा।

उन्हें यह बिलकुल पसंद नहीं आया। बड़ी भीड़ ने उसे खुशी से सुना, और शासकों ने अपने दाँत पीस लिए, लेकिन उन्होंने उससे सवाल पूछना बंद कर दिया। फिलिप्पियों 2:11, हमने दो राज्यों का पहला भाग, महान दो राज्यों का अंश पढ़ा।

हमने अपमान किया, कम से कम सरसरी तौर पर। भगवान की इच्छा से, हम भविष्य के व्याख्यान में इसके बारे में और अधिक बताएंगे। लेकिन दूसरा भाग उत्साह की स्थिति को दर्शाता है।

इसलिए, परमेश्वर ने उसे बहुत ऊंचा किया है, फिलिप्पियों 2:9, और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर स्वर्ग और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुके, और हर जीभ स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु है, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए। हमारे पास अभी इस पर गौर करने का समय नहीं है, लेकिन क्या यह वास्तव में हर घुटने और हर जीभ है? हाँ, यह है। तो, यह सार्वभौमिकता है, है ना? हर कोई बचा है, है ना? गलत।

पृष्ठभूमि यशायाह 45 है, और जैसा कि हम बाद में और अधिक विस्तार से देखेंगे, वहाँ हर जीभ यहोवा को स्वीकार करेगी, और हर घुटना उसके सामने झुकेगा, लेकिन उनमें से कुछ लोग इस बात से खुश होंगे कि उसने उन्हें माफ़ कर दिया है। दूसरे उससे नफरत करेंगे और घुटने टेकने के लिए मजबूर होंगे। यह बहुत अच्छा अनुवाद नहीं था।

हम उन्हीं शब्दों के साथ काम करेंगे, लेकिन शब्दों का यही अर्थ है। यानी, सारी मानवता अंत में मसीह के सामने झुकेगी, लेकिन हर कोई नहीं बचेगा, लेकिन सभी उसके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। यह विश्वासियों के लिए, उन लोगों के लिए जो धर्मी हैं, आराधना करने वाले हृदय से होगा।

यशायाह 45 के अंत में इसी तरह की भाषा बोली गई है। इसे जबरन थोपा जाएगा, और जिसे उन्होंने अस्वीकार किया है और जो उन्हें दोषी ठहरा रहा है, उसके बारे में स्वीकारोक्ति की जाएगी। निश्चित रूप से, यह एक दिव्य उपाधि है, प्रभु, इस संदर्भ में।

वह न्याय का कार्य कर रहा है। वह प्रभु के रूप में वह महिमा प्राप्त कर रहा है जो उसे मिलनी चाहिए। वह महिमा जिसे उसने हथियाने पर जोर नहीं दिया, जबकि वह, यद्यपि वह परमेश्वर के रूप में विद्यमान था, उसने परमेश्वर के साथ समानता को एक ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे पकड़ा जा सके।

वह अनंत काल में कह सकता था, पिता, मैं चाहता हूँ कि हर घुटना झुके और हर जीभ यह स्वीकार करे कि मैं प्रभु हूँ, और यह सही होता, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने हाथ बढ़ाकर उस चीज़ को नहीं छीना जो उसका अधिकार था। इसके बजाय, उसने खुद को दीन किया, और हालाँकि वह परमेश्वर के रूप में था, उसने एक दास का रूप लिया और पिता की आज्ञा का पालन किया और खुद को मृत्यु तक दीन किया, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु भी।

लेकिन उसके कारण, परमेश्वर ने उसे बहुत ऊंचा किया, इत्यादि। उस परिदृश्य में, हम सीखते हैं कि उसे अपने प्रभुत्व की सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त होगी, जिस पर उसने तब जोर नहीं दिया था जब उसने परमेश्वर का सेवक और हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिए खुद को विनम्र किया था। परमेश्वर का पुत्र एक शाही उपाधि है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

2 शमूएल 7 में लिखा है, "मैं उसका पिता बनूंगा, और सुलैमान और अन्य दाऊदवंशी राजा मेरे पुत्र होंगे," परमेश्वर ने कहा। इसलिए, यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने के बारे में सबसे पहली बात यह कही जानी चाहिए कि यह एक शाही उपाधि है। यह वही है जो गेब्रियल ने परमेश्वर की ओर से बोलते हुए मरियम से कहा था।

उसे अपने पिता डेविड की गद्दी मिलेगी और तुम्हारा बेटा हमेशा के लिए राज करेगा। वाह। जैसा कि एलिज़ाबेथ ने कहा, वह मेरे प्रभु की माँ है जो मुझसे मिलने आती है।

इससे मरियम की महिमा नहीं बढ़ती। यह निश्चित रूप से दर्शाता है कि वह एक ईश्वरीय सेवक है और ईश्वर द्वारा अपने बेटे को दुनिया में लाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला माध्यम है। और फिर भी, हमने कैथोलिक मरियमोलॉजी का विरोध किया है।

परमेश्वर के पुत्र, यूहन्ना 5 एक अच्छी जगह है। यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को चंगा किया जो 38 वर्षों से नहीं चल पाया था। उनके चंगाई और प्रेरितों के चंगाई के बारे में आश्चर्यजनक बात यह है कि, निश्चित रूप से दोनों में अंतर है।

वे इसे यीशु के नाम पर करते हैं। उसे महिमा मिलती है। लूका ने प्रेरितों के काम में उन चीज़ों के बारे में लिखा है जो यीशु ने अपनी पिछली पुस्तक में करना और सिखाना शुरू किया था, और इसका निहितार्थ यह है कि अब वह उन चीज़ों के बारे में लिख रहा है जो यीशु ने अपने प्रेरितों के माध्यम से पवित्र आत्मा द्वारा करना और सिखाना जारी रखा।

वे एक ही किताब हैं, जिसका एक ही लेखक है, ल्यूक एक्स। और यह हमारे द्वारा नहीं है कि यह आदमी ठीक हो गया है। पतरस एक लंगड़े आदमी के बारे में कहता है जिसे परमेश्वर ने उसके द्वारा चंगा किया, और यह यीशु मसीह के नाम पर है कि मैंने उससे कहा, अपना बिस्तर उठाओ और चलो, ठीक है? इस तरह। यहाँ, यीशु, अपने नाम में, ये काम करता है।

वह एक ऐसे व्यक्ति को चंगा करता है जो 38 साल से लंगड़ा था। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, इससे काफी हंगामा हुआ। और, बेशक, यीशु ने शनिवार को ऐसा किया, जानबूझकर दया में नेताओं के खिलाफ जा रहा था क्योंकि वह उनकी परवाह करता था।

अगर उसने उन्हें कभी चुनौती नहीं दी होती, तो वे सभी नष्ट हो जाते। मुझे नहीं पता कि कितने प्रतिशत लोग नष्ट हुए, लेकिन उनमें से सभी नहीं, जैसा कि हमने प्रेरितों के काम 6 से सीखा। छः। बहुत से, यहाँ तक कि लेवी जनजाति के याजकों ने भी उस पर विश्वास किया।

अद्भुत। उनके लिए यह प्रति-सांस्कृतिक है। यह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करता है जिन्होंने उनके जीवन में काम किया।

वैसे भी, यीशु ने एक अंधे व्यक्ति को ठीक किया, और यह यहूदी बुद्धिजीवियों और नेतृत्व द्वारा अच्छी तरह से स्वीकार नहीं किया गया। यीशु ने उस व्यक्ति को मंदिर में पाया। उसने उसे खोजा।

देखो तुम अच्छे हो, यूहन्ना 5, 14. फिर से पाप मत करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो जाए।

एक ओर, यीशु यूहन्ना 9 में शिष्यों से कहते हैं कि न तो इस व्यक्ति ने और न ही उसके माता-पिता ने पाप किया कि वह अंधा पैदा हुआ। यह मेरे लिए परमेश्वर की महिमा प्रकट करने का अवसर है। इसलिए, वह इस बात से इनकार कर रहे हैं कि सभी बीमारियाँ सीधे पाप का परिणाम हैं।

दूसरी ओर, यहाँ, उनका तात्पर्य है कि पाप शारीरिक विपत्ति की ओर ले जा सकता है। वह आदमी चला गया और यहूदियों से कहा कि यह इतना अच्छा कदम नहीं था, कि यह यीशु ही था जिसने उसे चंगा किया। यही कारण था कि यहूदी यीशु को सता रहे थे।

शायद उस आदमी का कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं था। शायद वह सिर्फ़ भोला था और उसे समझ भी नहीं आया। ओह, शायद वे भी उसके बारे में और जानना चाहते हैं।

मुझे नहीं पता। हम नहीं जानते कि उसके दिल में क्या चल रहा है। यहूदी उसे सता रहे हैं।

क्यों? क्योंकि वह सब्त के दिन ये काम कर रहा था। लेकिन यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरे पिता अब तक काम कर रहे हैं, और मैं भी काम कर रहा हूँ।" यह एक अजीब कथन है।

ठीक है। वह जो कह रहा है, असल में, मैं सब्त के दिन ये काम करने में सक्षम हूँ क्योंकि मैं कौन हूँ। मार्क के सुसमाचार में, वह कहता है, मैं सब्त का प्रभु हूँ।

वह खुद को ईश्वर के स्थान पर रख रहा है। अब, हम श्लोक 18 में देखेंगे, अगला, यह इस बात का प्रमाण है कि ईश्वर का पुत्र एक दिव्य उपाधि है। लेकिन पहले से ही इस भाषा के साथ, मेरे पिता आज तक काम कर रहे हैं और मैं भी काम कर रहा हूँ।

यीशु ने लंगड़े आदमी को चंगा करने को ईश्वर के दैवी कार्य के बराबर बताया। तल्मूड यहूदी ज्ञान, हास्य, बकवास, सभी प्रकार की चीजों का एक आकर्षक संग्रह है। और यह न्यू टेस्टामेंट से बाद में लिखा गया है।

और फिर भी यह कभी-कभी हमें अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। मेरे पिता अभी भी काम कर रहे हैं। रब्बियों ने इस बात पर बहस की कि अच्छा भगवान सप्ताह के सातों दिन, शनिवार सहित, क्या करता था।

उन्होंने कहा, वह दुनिया को चलाता है। भगवान शनिवार को अपना काम करना बंद नहीं करता। वरना दुनिया रुक जाती।

इसके अलावा, यहूदी समुदाय के मामले में, बच्चे सप्ताह में सात दिन पैदा होते थे। क्या वे शनिवार को पैदा होने वालों को किसी और स्रोत से जोड़ेंगे? नहीं। ईश्वर सप्ताह में सात दिन ईश्वर की कृपा से काम करता है।

भगवान ने सप्ताह के सातों दिन बच्चों के जन्म में काम किया। और क्या पता? बूढ़े लोग भी शनिवार को मरते थे। भगवान ने उन्हें शनिवार को ही दुनिया से विदा किया।

इस तरह की पृष्ठभूमि के साथ, जो बाद में तल्मूडिक लेखन में समाहित है, जब रब्बियों ने इन बातों पर बहस की, हम यीशु के शब्दों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। मेरे पिता अभी भी काम कर रहे हैं। उनका मतलब ऐसी ही बातों से है।

ईश्वरीय कार्य, जिसे उन्होंने शनिवार को ईश्वर द्वारा किया गया कार्य माना। और मैं कार्य कर रहा हूँ। यही कारण है कि, पद 18 में, यहूदी उसे मारने के लिए और भी अधिक प्रयास कर रहे थे।

न केवल वह सब्बाथ का उल्लंघन कर रहा था, बल्कि हम निश्चित रूप से जानते हैं कि पुराने नियम में कहा गया है, तुम शनिवार को 38 साल से लंगड़े लोगों को ठीक नहीं करोगे, है न? यह बेतुका है। उन्हें ओज़ी स्मिथ की तरह बैकफ़्लिप करना चाहिए था। ओह, सेंट लुइस का संदर्भ यहाँ चुपके से निकल गया।

और उन्हें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए थी कि यह आदमी ठीक हो गया, कि अब्राहम का बेटा ठीक हो गया। और अब वह एक सामान्य जीवन जी सकता है और परमेश्वर की महिमा कर सकता है और उसकी सेवा कर सकता है। ओह, नहीं।

अरे नहीं। वे लोग बहुत ज़्यादा नुक्स निकालने वाले हैं। तुम्हें शनिवार को उसका इलाज नहीं करना चाहिए।

लेकिन वे यीशु से और भी अधिक नफरत करते थे क्योंकि वह परमेश्वर को अपना पिता कह रहा था, खुद को परमेश्वर के बराबर बता रहा था। मूल अर्थ में, न कि उस अंतरंग अर्थ में जिसे यीशु ने परमेश्वर के पितात्व में लाया, उन्होंने सोचा कि वे परमेश्वर की संतान हैं। अब्राहम की संतान होने के नाते, उन्होंने सोचा कि वे परमेश्वर की संतान हैं।

जैसा कि हमने कहा, यहूदा 8 में यीशु को इस बात से परेशानी है कि उसने यहूदियों को शैतान की संतान कहा है, कम से कम बहुत से यहूदियों को। लेकिन जब वह परमेश्वर को अपना पिता कहता है, तो वह ऐसा करता है। वे इसे समझ लेते हैं।

वह इसे कहीं ज़्यादा सार्थक तरीके से कर रहे हैं। वह उनसे कहीं ज़्यादा दावा कर रहे हैं। मेरे पिता अभी भी काम कर रहे हैं, और मैं भी काम कर रहा हूँ।

वह लंगड़े आदमी को ठीक करने को सप्ताह के सातों दिन ईश्वर के अलौकिक, दैवी कृत्यों के समान स्तर पर रख रहा है। ऐसा करके, वह ईश्वर को अपना पिता कहकर खुद को पिता के बराबर बना रहा है, जिसका अर्थ है कि वह खुद को ईश्वर का पुत्र कह रहा है। इब्रानियों 1 में दो बार, हमारे पास ईश्वरीय उपाधि के रूप में पुत्र है।

हम अभी भी उपाधियों पर काम कर रहे हैं। मैंने आपको बताया था कि इब्रानियों में बेटा एक ईश्वरीय उपाधि है। वास्तव में, यह है।

और पद 2 में, इन अंतिम दिनों में, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं से बात करने के बजाय, भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पिताओं से बात की, इन अंतिम दिनों में, उसने अपने पुत्र के द्वारा हमसे

बात की है। अब, देखें कि वह पुत्र के बारे में क्या कहता है, जिसे उसने सभी चीज़ों का वारिस नियुक्त किया है। केवल परमेश्वर ही उस स्थान पर है, जिसके लिए उसने संसार की रचना भी की है।

सृष्टिकर्ता स्वयं ईश्वर है। और फिर वह ईश्वर की महिमा की चमक है और इसी तरह। इसलिए 1, और 2 में, हमारे पास एक पुत्र है जिसका उपयोग दिव्य तरीके से किया गया है।

इसी तरह, 1:8 में, पुत्र के बारे में, परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के बारे में जो कहा है, उसके विपरीत, वे परमेश्वर की सेवा करते हैं। पुत्र के बारे में, वह कहता है, हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन हमेशा-हमेशा के लिए है, भजन 45, 6, और 7 का हवाला देते हुए। जब इब्रानियों ने पुत्र को पुत्र कहा। यह इसे एक दिव्य उपाधि के रूप में उपयोग करता है। बेशक, पवित्र शास्त्र में पुत्र शब्द का अर्थ हमेशा परमेश्वर नहीं होता।

इस संदर्भ में इसका यही अर्थ है। प्रभु एक दिव्य उपाधि है। परमेश्वर का पुत्र एक दिव्य उपाधि है।

मनुष्य का पुत्र, वैसे ही। मत्ती 26, यीशु खुद को बड़ी मुसीबत में डाल लेता है। मनुष्य का पुत्र एक आकर्षक ईसाई धर्म संबंधी शीर्षक है।

नंबर एक यीशु का पसंदीदा आत्म-पदनाम है। नंबर दो, वह हमेशा तीसरे व्यक्ति में इसका उपयोग करता है। वह कभी नहीं कहता कि मैं मनुष्य का पुत्र हूँ।

आज भी उदारवादी लोग सोचते हैं कि वह किसी और के बारे में बात कर रहे हैं। उनमें से कुछ लोग ऐसा सोचते भी हैं। हाँ, वाह, यह सही है।

यह मेरे लिए अविश्वसनीय है। और नए नियम का डेटा अलग-अलग है। उदाहरण के लिए, पक्षियों के अपने घोंसले होते हैं।

लोमड़ियों के पास अपनी मां हैं। मनुष्य के बेटे के पास सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं है। वह मनुष्य है, कमज़ोर, असुरक्षित मनुष्य का बेटा।

दूसरी ओर, जब आप मनुष्य के पुत्र को आकाश के बादलों में आते देखते हैं, तो वह मनुष्य का दिव्य पुत्र होता है। आप जानते हैं क्या? रहस्योद्घाटन के ये दो प्रकार पुराने नियम से आते हैं। भजन 8 पहला विचार है।

क्या है, जब मैं आकाश को देखता हूँ जिसे तूने तैयार किया है, सूर्य और चंद्रमा और तारे, वे कितने महान हैं। मनुष्य क्या है? वह छोटा मनुष्य जिसका तू ध्यान रखता है। मनुष्य का पुत्र जिसका तू ध्यान रखता है।

वह कमज़ोर, मानव, मनुष्य का पुत्र है, है न? दानियेल 7 में, मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठता है, और आराधना उसकी ओर निर्देशित होती है। और यीशु उन दोनों से संबंधित अंश उद्धृत करता है। यह और भी जटिल है, लेकिन दोनों, अनुमान लगाइए क्या? मानवता,

उसकी दीन मानवता, और उसके शानदार देवता का उल्लेख किया गया है; यीशु इस भाषा में खुद को संदर्भित करता है, हमेशा तीसरे व्यक्ति में, अपने दुश्मनों को भ्रमित करते हुए।

हमें लगता है कि शायद यह मसीहाई रहस्य का हिस्सा है। आप जानते हैं, यीशु अपने पहले उपदेश में नहीं आए और कहा, मैं मसीहा हूँ, आओ और मुझे ले जाओ। नहीं, उन्होंने ऐसा नहीं किया।

विजयी प्रवेश उनके मंत्रालय के अंत में था, और यह उनके क्रूस पर चढ़ने का कारण बना, है न? तो मेरा मानना है कि यूहन्ना 2 में, जब वह ऐसा करता है, तो वह काना में पानी को शराब में बदल देता है, वह धीरे से मरियम को उसके स्थान पर रखता है और कहता है, मरियम, मुझे पिता की माँ का अनुसरण करना है। महिला शब्द अपमानजनक नहीं है। यह वही शब्द है जिसका उपयोग वह यूहन्ना 19 में क्रूस से लेकर यूहन्ना तक करता है।

जॉन, अपनी माँ को देखो। औरत, अपने बेटे को देखो। क्या वह अपनी माँ पर व्यंग्य कर रहा है? नहीं, वह कह रहा है, प्यारी माँ, यह तुम्हारा है।

जॉन तुम्हारा ख्याल रखेगा, मेरी प्यारी शिष्या। उसी तरह, लेकिन वह उसे उसकी जगह पर रखता है। माँ, मुझे सुर्खियों में मत डालो।

पिता के लिए यह समय नहीं है। वह यूसुफ के बारे में बात नहीं कर रहा है, जो जाहिर तौर पर, जब तक वह जीवित है, एक अच्छा सौतेला पिता है। नहीं, और जॉन 7 में, यह समान है।

उसके भाई, यहाँ तक कि उसके अपने भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे। हे जादूगर, तम्बूओं के पर्व में जाओ और उन्हें कुछ आकर्षक करतब दिखाओ। ओह, यीशु ने कहा, दुनिया मुझसे नफरत करती है क्योंकि मैं इसकी निंदा करता हूँ, कहता हूँ कि इसके काम बुरे हैं।

दुनिया तुमसे नफरत नहीं कर सकती क्योंकि तुम दुनिया के हो। अरे, बड़ा भाई यहाँ बहुत सख्त आदमी है। मैं दावत में नहीं जा रहा हूँ।

इसका अर्थ इस समय है। वह बीच में ही गुप्त रूप से ऊपर चला जाता है और अपमानजनक बातें कहता है जो आंशिक रूप से उसकी पहचान को उजागर करती हैं, लेकिन फिर भी कई बार वह तथाकथित मसीहाई रहस्य में ठीक हो जाता है, जिसका उदारवादी हाथों में भयानक दुरुपयोग किया गया था। इस विचार में कुछ तो है।

आप जानते हैं, वह चंगा करता है और कहता है, जाओ और पुजारी को भेंट चढ़ाओ, लेकिन दूसरे लोगों को मत बताना। अब, कभी-कभी उन्होंने ऐसा किया, कभी-कभी उन्होंने ऐसा नहीं किया। लेकिन जैसा कि हमने जॉन 7 में पहले के व्याख्यान में देखा, यीशु यहूदिया से दूर रहे क्योंकि उन्हें पता था कि वहाँ के यहूदी उन्हें मारना चाहते थे।

इसलिए, उन्होंने तुरंत कोई बड़ा धमाका नहीं किया। विजयी प्रवेश क्रूस की ओर ले जाता है। और हमेशा और केवल पिता की इच्छा पूरी करना, यह उनके जीवन और मंत्रालय में बाद के लिए था।

मत्ती 26:64 में मनुष्य के पुत्र का कथन अविश्वसनीय है। यीशु महायाजक कैफा, महायाजक और महासभा के सामने है। और महायाजक ने उससे कहा, मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूँ।

वह उसे शपथ दिला रहा है। हमें बता कि क्या तू मसीह है, परमेश्वर का पुत्र। यीशु ने उससे कहा, तूने सच कहा है।

इसका मतलब है, मैं हूँ। थोड़ा तिरछा उत्तर दिया, लेकिन फिर भी। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, अब से तुम मनुष्य के पुत्र को शक्ति के दाहिने हाथ पर बैठे देखोगे।

एक घुमावदार रास्ता, नियमों के बीच और नए नियम में आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले परमेश्वर के नाम से बचने का एक तरीका और स्वर्ग के बादलों पर आना। ओह, महायाजक दानियेल 7 से इस भाषा को समझता है। तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, उसने ईश्वर की निन्दा की है। आपको और किस गवाही की ज़रूरत है? आपने अब उसकी निन्दा सुन ली है।

आपका क्या फैसला है? उन्होंने कहा कि वह मौत के लायक है। और वे उसे पीटना शुरू कर देते हैं। यह एक दिव्य उपाधि है जिसे यीशु इस्तेमाल करते हैं।

कभी-कभी यह वास्तव में इसी संदर्भ में होता है। और यह उसके क्रूस की ओर ले जाता है। यीशु के पास परमेश्वर, प्रभु, मनुष्य का पुत्र, या स्वयं परमेश्वर की उपाधि थी।

न केवल यूहन्ना 1:1, 18 में दो बार उसे परमेश्वर कहा गया है। आरंभ में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और फिर पद 18 में एकमात्र परमेश्वर की बात कही गई है।

किसी ने कभी ईश्वर को नहीं देखा है, लेकिन पिता के पास जो एकमात्र ईश्वर है, उसने उसे जाना है। न केवल यूहन्ना 1:1 से 18 में यीशु के ईश्वरत्व की इस प्रत्यक्ष पुष्टि के साथ एक समावेशन या अन्य बुकएंड है, बल्कि यूहन्ना के सुसमाचार में भी ये बुकएंड, यह समावेशन है। और समावेशन, निश्चित रूप से, एक अलंकार है जहाँ एक ही शब्द या अवधारणा साहित्य की एक इकाई के दो छोर पर दिखाई देती है।

यह एक आयत जितना छोटा भी हो सकता है। हम इसे बाद में कुलुस्सियों 1 में देखेंगे। या यह एक पूरे दस्तावेज़, यूहन्ना के सुसमाचार जितना बड़ा भी हो सकता है।

न केवल अध्याय 1 में दो बार कहा गया है कि वह ईश्वर है, बल्कि अध्याय 20 में, थॉमस, जो पहली बार अनुपस्थित था जब यीशु शिष्यों के सामने प्रकट हुआ था, इस बार वहाँ है। पहली बार, उसने कहा, जब तक मैं अपना हाथ उसके बाजू और उसके हाथों में नहीं डालूँगा, मैं विश्वास नहीं करूँगा, है न? यीशु ने अपील की और उसके सामने प्रकट हुआ। थॉमस जानता है कि यह कौन है।

उसका जवाब क्या था? यूनानी में कहा गया है कि उसने उससे कहा, मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर। मेरा दिल पंथों के लिए है। और सालों से, मैंने प्रार्थना की है, कि परमेश्वर पंथों के लिए सेवकाई करने के लिए एक या अधिक छात्र तैयार करे।

सेंट लुइस सेमिनरी में अध्यापन के अपने अंतिम वर्षों में, प्रभु ने ऐसा किया। मुझे आश्चर्य हुआ। यह एक महिला थी।

वह ईसाई विज्ञान की पृष्ठभूमि से थी। वह मसीह की ओर आकर्षित हो रही थी। ओह, फिर वह मसीह के पास आ गई।

वह मसीह में बढ़ रही थी। क्या वह एक योग्य छात्रा थी? हाँ। क्या वह सबसे अच्छी छात्राओं में से एक थी? नहीं।

लेकिन आप जानते हैं क्या? भगवान का हाथ उस पर था, और वह समझ गई। केटी ने भूतपूर्व दक्षिणी लोगों के लिए एक मंत्रालय शुरू किया है, जो, क्षमा करें, भूतपूर्व ईसाई वैज्ञानिक हैं। आह, कितनी भयानक चूक है।

केटी ने भूतपूर्व ईसाई वैज्ञानिकों के लिए एक मंत्रालय शुरू किया है जिसका प्रभु अद्भुत ढंग से उपयोग कर रहे हैं। यह एक अद्भुत बात है। मेरी प्रार्थना में, परमेश्वर ने एक विनम्र, मधुर, बुद्धिमान महिला का उपयोग करके मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया जो प्रभु से प्रेम करती है और अपने लोगों को नहीं भूलती।

वह प्रिंसिपिया हाई स्कूल के परिसर में पली-बढ़ी, जो एक ईसाई वैज्ञानिक हाई स्कूल है। और प्रभु उसका अद्भुत उपयोग कर रहे हैं। मैं इस बात से खुश हूँ कि प्रभु ऐसा कर रहे हैं।

लेकिन वे, बेशक, इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु ईश्वर हैं। और पंथ, वहाँ नहीं है, ठीक है, मैरी बेकर एडी की विज्ञान और स्वास्थ्य शास्त्रों की कुंजी के साथ, बाइबिल की उनकी गलत व्याख्या है। कोई ईसाई विज्ञान बाइबिल नहीं है, लेकिन तथाकथित यहोवा के साक्षियों का गलत अनुवाद कहता है कि उसने कहा, हे भगवान, थॉमस ने कहा, हे भगवान।

नहीं, उसने ऐसा नहीं कहा, हे भगवान। ग्रीक पाठ में कहा गया है कि थॉमस ने उससे कहा, यह स्वर्ग की ओर जाने वाली मिठाई नहीं है। यह एक अन्य यहूदी व्यक्ति को संबोधित है।

और संदेह करने वाले थॉमस ने, उसके लिए प्रभु का धन्यवाद करते हुए, यीशु से कहा, मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर। दो दिव्य उपाधियाँ हैं। इस बड़े समावेश का दूसरा भाग अध्याय एक में यीशु के ईश्वरत्व के दो संदर्भ हैं।

यूहन्ना रचित सुसमाचार मसीह के ईश्वरत्व को नहीं छिपाता। यह हर अध्याय में, खास तौर पर पहले 12 अध्याय में, इसे ज़ोर से बताता है - हे भगवान।

यीशु ने दिव्य उपाधियों का प्रयोग किया है। यह एक न्याय-वाक्य है। कुछ उपाधियों का प्रयोग परमेश्वर ने दिव्य तरीके से किया है।

प्रभु, मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर और परमेश्वर का पुत्र का उपयोग यीशु ने इसी तरह किया है। इसलिए, यीशु परमेश्वर, पुत्र है। इतना ही नहीं, बल्कि इब्रानियों में मसीह के ईश्वरत्व का एक और प्रमाण है। और वह यह है कि, उनमें परमेश्वर के गुण हैं।

कुछ ऐसे गुण हैं जो केवल परमेश्वर के पास हैं। इब्रानियों 1:12, 11, और 12 सृष्टिकर्ता और उसकी सृष्टि के बीच अंतर बताते हैं। पद 10 के बाद, हे प्रभु, तूने ही आदि में पृथ्वी की नींव रखी, और स्वर्ग तेरे हाथों का काम है।

जोर देते हुए, बेटे ने आकाश, पृथ्वी और आकाश को बनाया, जो कि भजन 102 उत्पत्ति 1 से क्रम को उलट देता है, एक पृथ्वी और आकाश। वे श्लोक 11, आकाश और पृथ्वी नष्ट हो जाएंगे, लेकिन आप बने रहेंगे। वे सभी एक वस्त्र की तरह, एक लबादे की तरह घिस जाएंगे।

तुम उन्हें एक वस्त्र की तरह लपेटोगे। वे बदल जाएंगे, लेकिन तुम वही हो, और तुम्हारे वर्षों का कोई अंत नहीं होगा। क्षणभंगुर स्वर्ग और पृथ्वी के विपरीत, जो लगातार परिवर्तनशील है और जिसे परमेश्वर केवल अंतिम दिन ही पूरी तरह से नवीनीकृत करेगा, जिसकी एक शुरुआत थी और इसका एक अंत है इस अर्थ में कि एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगी।

वर्तमान आकाश और पृथ्वी का जीर्णोद्धार किया जाएगा। इसे साफ किया जाएगा और इसका जीर्णोद्धार किया जाएगा। इसके विपरीत, बेटा वही है, और उसके वर्षों का कोई अंत नहीं होगा।

यह अपरिवर्तनीयता का एक दिव्य गुण है। कई महत्वपूर्ण तरीकों से, परमेश्वर स्वयं नहीं बदलता है। कुछ मायनों में, अवतार दर्शाता है कि परमेश्वर का पुत्र बदल गया, और बाइबिल की कहानी से पता चलता है कि परमेश्वर अपने लोगों से संबंध बनाने के अर्थ में बदलता है, वास्तव में अपने लोगों से संबंध बनाने के अर्थ में, लेकिन मुझे सकारात्मक होना चाहिए।

अपरिवर्तनीयता का अर्थ है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है जैसा कि प्रभु मलाकी के माध्यम से कहते हैं। मैं, प्रभु, बदलता नहीं हूँ। इसलिए, हे याकूब के पुत्रों, तुम नष्ट नहीं हुए।

और याकूब 1 में, बदलती छाया और मानवीय अविश्वास के विपरीत, प्रभु नहीं बदलता है। वह अपने चरित्र में, अपनी अंतिम योजना और इच्छा में, और अपने तरीकों में स्थिर है। लेकिन वह बदलता है, अगर आप इसे ऐसा कहना चाहते हैं, अपने लोगों के साथ वाचा में प्रवेश करने में, हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने में, न्याय की घोषणा करने में, और फिर पश्चाताप से मिलने पर उसे रोक लेने में, और इसी तरह।

यह केवल यह कह रहा है कि अपरिवर्तनीयता का गुण ईश्वर के साथ सुसंगत है, जो एक अनंत व्यक्ति है जिसने अपने लोगों के साथ एक लेन-देन संबंध में प्रवेश करना चुना है। ओह, वह रिश्ते का भगवान है, मेरी अच्छाई, और वह संप्रभु भगवान है, लेकिन एक वास्तविक संबंध है। और

फिर, मैं वास्तव में स्पष्ट था कि पहले दो रहस्य, त्रिदेव और मसीह की दो प्रकृतियाँ, ईसाई धर्म के लिए आवश्यक हैं।

और तीसरा, पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता और वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी के बीच मेरा अपना कैल्विनवादी संगतिवाद, उतना महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन यह उतना ही रहस्यमय है। और शुक्र है कि ईसाई होने के लिए आपको कैल्विनवादी होने की ज़रूरत नहीं है। ईसाई होने के लिए आपको यीशु पर विश्वास करना होगा।

लेकिन यह रहस्यपूर्ण है कि यूसुफ के भाई अपने भाई को गुलामी में बेचने के लिए उसके खिलाफ कैसे बैठ सकते हैं। यह बीमार है। और इसी तरह, यूसुफ के मुंह से, वह कहता है, तुम मुझे यहाँ नहीं लाए।

यह एक लंबी कहानी है, लेकिन वह फिरौन के बाद दूसरे नंबर पर आता है, यहाँ तक कि अपने परिवार को भी बचाता है, जिसमें उसके दुष्ट भाई भी शामिल हैं। तुम मुझे यहाँ नहीं लाए, बल्कि भगवान लाए हैं। खैर, तुम्हें पता है क्या? वे उसे यहाँ लाए, लेकिन अंततः नहीं।

यानी, वे मानवीय रूप से जिम्मेदार थे, यहां तक कि दोषी भी। ओह, उसके पागल बचपन के सपने पूरे हो गए, और वे उसके सामने झुक गए। बाद में, वह कहता है, तुमने इसे बुराई के लिए इरादा किया था।

वह उनकी गलती को स्वीकार करता है, लेकिन भगवान ने इसे अच्छे के लिए किया था। और उसने भगवान की कृपा का रस पीकर उन्हें मुक्त कर दिया था। वह बिना किसी सवाल या परिणाम के उन्हें मार सकता था, लेकिन वह भगवान की कृपा को जानता था।

उल्लेखनीय कहानी। मैं न केवल पुराने नियम में परमेश्वर के महान संतों के जीवन से विनम्र हूँ, बल्कि उनके पास जो कुछ था और जो वे जानते थे, उससे धिक्कार भी महसूस करता हूँ। हमें खुद पर शर्म आनी चाहिए क्योंकि हम बहुत कुछ जानते हैं और हमारे पास बहुत कुछ है।

उदाहरण के लिए, यूसुफ की तुलना में हम इसके साथ क्या करते हैं? वाह। मैं उसे पापरहित नहीं बना रहा हूँ। और हाँ, अपने भाइयों के सामने शेखी बघारना सही नहीं था, लेकिन यह उसके बचकाने उत्साह में था।

लेकिन वाह, यह अविश्वसनीय है। ईश्वरीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी का सबसे बड़ा प्रकटीकरण हमारे प्रभु का क्रूस है। प्रेरितों के काम 2 और प्रेरितों के काम 4 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि दुष्ट लोगों के हाथों से उसे क्रूस पर चढ़ाया गया; वे दोषी हैं।

लेकिन इसी तरह, परमेश्वर ने अपनी स्वयं की योजना और संप्रभुता में, दुनिया के इतिहास में सबसे बड़ी संख्या में लोगों के लिए सबसे बड़ा भला किया। क्रूस, खाली कब्र के साथ, इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण दिव्य कार्य हैं। तो क्या हम इस दिव्य संप्रभुता और जिम्मेदारी के मामले को पूरी तरह से समझते हैं? नहीं, बेशक हम नहीं समझते।

हम बस इतना कर सकते हैं कि मापदंड तय करें। हम बाइबल की पुष्टि करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे अन्य रहस्य। परमेश्वर पूर्ण रूप से सर्वोच्च है, और जो कुछ भी होता है, वह सत्य है।

इसी तरह, मनुष्य भी जिम्मेदार, जवाबदेह और दोषी है। हम जो करते हैं, वह मायने रखता है। यह अति-कैल्विनवाद है जो कहता है, ओह, भगवान वास्तव में प्रार्थनाओं का जवाब नहीं देते हैं।

इससे हमें बेहतर महसूस होता है। भगवान प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं। मैथ्यू 7 में, यीशु कहते हैं, पूछो, खोजो और खटखटाओ, और भगवान जवाब देंगे, तुम पाओगे, और तुम्हारे लिए दरवाजा खोला जाएगा।

मैं इसे पूरी तरह से नहीं समझ सकता। ओह, मैं आपको कुछ आंशिक स्पष्टीकरण दे सकता हूँ, लेकिन मैं ऐसा भी नहीं करने जा रहा हूँ। मैं बस इतना ही कहूँगा कि यह सच है।

और यद्यपि अति-कैल्विनवाद, और मैं इसे नहीं बना रहा हूँ, मैं आपको तकनीकी पुस्तकें दिखा सकता हूँ, दुख की बात है, जो कहती हैं कि हमें सुसमाचार का प्रचार नहीं करना चाहिए। जब भी परमेश्वर चाहेगा, वह चुने हुए लोगों को बचाएगा। गलत।

पवित्र शास्त्र कहता है, यीशु के होठों में, महान आदेश में, सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाओ। परमेश्वर ने हमें सुसमाचार लाने के लिए उपयोग करने का आदेश दिया है। हाँ, उद्धार सब कुछ उसी का है, लेकिन किसी तरह, यह गतिशील अंतर्क्रिया है।

आह, ये वो शब्द हैं जिनकी मुझे तलाश थी। विरोधाभास, विरोधाभास या रहस्य से कहीं बेहतर लगता है, है न? ईश्वरीय संप्रभुता और, मेरा मानना है, मानवीय जिम्मेदारी के बीच यह गतिशील अंतर्क्रिया। और फिर भी, अगर यह रहस्य को अस्पष्ट करने का एक तरीका है, तो यह उचित नहीं है।

यह पहले से नहीं बताया गया है। यह एक रहस्य है। इसलिए, हमें एक ही समय में दोनों बातों की पुष्टि करनी होगी।

ओह, हमने पैरामीटर्स कहा, ठीक वैसे ही जैसे पिताओं के महान त्रित्ववादी और क्राइस्टोलॉजिकल कथनों के साथ। एक ओर, ईश्वर की संप्रभुता भाग्यवाद नहीं है क्योंकि बाइबल के ईश्वर का एक चरित्र है। वह एक व्यक्ति है।

यह कोई मृत्यु-मृत्यु नहीं है; जो होगा, वह होगा। हम भाग्य की अंधी दया पर नहीं हैं, ग्रीक भाग्य की दया पर नहीं हैं। नहीं, हम दया पर हैं, और बाहों में हैं, और महान और शक्तिशाली ईश्वर के हाथों में हैं, जिन्होंने हमसे प्यार किया और हमारे लिए अपना बेटा दे दिया।

इसलिए, भाग्यवाद समाप्त हो गया है, और परमेश्वर हमारा सर्वोच्च पिता है। दूसरी ओर, वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी है, और हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते कि यह पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता के साथ कैसे जुड़ा है। हम इसे यीशु के व्यक्तित्व में भी नहीं समझ सकते।

वह संप्रभु और जिम्मेदार दोनों है। लेकिन उस तरफ, हम दार्शनिकों द्वारा कहे जाने वाले पूर्ण शक्ति को रद्द कर देते हैं। वास्तविक मानवीय स्वतंत्रता और वास्तविक स्वतंत्र इच्छा वाला प्राणी, उस अर्थ में, निर्माता की इच्छा को रद्द नहीं कर सकता।

भगवान वहाँ अपनी साँस रोके हुए नहीं बैठे हैं, उम्मीद करते हुए कि चीजें ठीक हो जाएँगी। नहीं, भगवान भगवान हैं। इसलिए, मापदंड निर्धारित करना, भाग्यवाद को गैरकानूनी घोषित करना, और इसके विपरीत पूर्ण शक्ति, कुछ कार्य, जैसे कि यूसुफ के भाइयों द्वारा उसे धोखा देना और हमारे प्रभु को सूली पर चढ़ाना, एक साथ दैवीय और मानवीय कार्य हैं।

जाओ और उसे समझाओ। मुझे पता है कि यह सच है, और मैं इसे आंशिक रूप से समझा सकता हूँ, लेकिन मैं इसे पूरी तरह से नहीं समझा सकता। यानी, यह बाइबल में बताया गया एक और सच्चा रहस्य है।

क्या यह त्रिदेव और मसीह के दो स्वभावों जितना ही महत्वपूर्ण है? नहीं। क्या यह मेरी समझ में उतना ही रहस्यमय है? हाँ। हम अपने अगले व्याख्यान में मसीह के ईश्वरत्व के बारे में बात करेंगे, न केवल उनके गुणों या विशेषताओं पर बल्कि उनके कार्यों पर भी, जो शायद सबसे बड़ा प्रमाण है, और यह तथ्य कि अच्छे लोगों और अच्छे स्वर्गदूतों के विपरीत, उन्हें पूजा मिलती है।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 13 है, सिस्टमैटिक्स, मसीह का ईश्वरत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण, और अन्य ग्रंथ, प्रकृति और शीर्षक।